यहाँ शान्ति अच्छी रहती है। शहर में बाहर का आवाज़ बहुत होता है। वह शान्ति को डिसटर्ब करते हैं। ..... तुम बच्चों को समझाया जाता है बाप को याद करना है तो भल कितना भी आवाज़ हो तुम याद कर सकते हो। आवाज़ तो बाहर का है। तुम्हारी है अन्दर की बुद्धि की याद। आवाज़ की खिट–पिट मुरली सुनने में होगी। बाकी भल नगारा बजता रहता है, दफ्तर में बैठे हो कितना भी हंगामा हो तुम बाप को याद कर सकते हो। घमसान में मुरली नहीं सुन सकते हो। याद कर सकते हो। यह प्रैक्टिस भी तुम कर सकते हो। सटोरी सटे लगाते हैं वहाँ तो आवाज़ बहुत होता है। कोशिश कर देखो हम अपने को आत्मा समझ बाप को याद कर सकते हैं। याद है मुख्य। पावन बनने की बात है ना। जितना जो पावन बनावेंगे अर्थात् मुक्ति देते रहेंगे। याद से मुक्ति ज्ञान से जीवनमुक्ति। कोई भी धर्म वाला हो याद कराते हो। पवित्र बन बाप से मिलते हैं। बच्चों को मालूम है करांची में बताया था सभी धर्म के जो बड़े2 हैं वह आकर मिलेंगे महावाक्य सुनेंगे। बाप को याद करेंगे जिससे फिर अपने धर्म में ऊँच पद पावें। बाप सर्व का सद्गति दाता है। अखबार में भी तुम्हारा जाना है। चित्र भी अखबार में पड़ेंगे। लिखेंगे तुम कि अपन को आत्मा समझो। शरीर तो विनाशी है। आत्मा अविनाशी है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। मुक्ति को पा सकते हो। बाप पतित–पावन है उनके महावाक्य है जो निरन्तर याद करेंगे उनके जन्म जन्मान्तर के पाप कट सकते हैं। ऐसी2 बातें अखबार में पड़ेंगे। अखबारों में फालतू तो बहुत पड़ता है। तुम्हारी तो यह कमाई है। भविष्य जन्म जन्मान्तर के लिए। विनाशी धन की कमाई तुम नहीं कर रहे हो। तुम पढ़ रहे हो। ऐसे नहीं समझेंगे कि बाप स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं इसलिए हम ल0ना0 बनेंगे। हाँ स्वर्ग वासी होते हैं। बाप ऐसी नालेज सुनाते हैं जो नम्बरवार पास होते हैं। लॉटरी मिलती है। स्कालरशिप मिलती है। इसलिए उनको सहज कहा जाता है। बड़ समझ सकते हैं बच्चा वारिस है। खुद तो बच्चा समझ न सके। तुम हो ही बालग। बाप का निश्चय हुआ डायरेक्शन मिलेंगे 84 जन्मों के चक्र को याद करो और बाप की याद में रहो तो बेरा पार। खेवइया भी चाहिए ना। जो पार लगाये। परमपिता परमात्मा को खेवइया कहते हैं। कृष्ण को बागवान वा खेवइया नहीं कहेंगे। भगवान खेवइया है। उस पार ले जाते हैं। बागवान भी उनको कहते हैं। हरेक पुकारते तो हैं ना खेवइया हमारी नइया पार लगाओ। उस तरफ चले जावेंगे। पार का अर्थ ही है मुक्ति जीवनमुक्ति। भक्ति में पुकारते याद करते स्तुति करते ही रहते हैं। वह तो जड़ चित्र है। तुम चैतन्य खड़े हो। बाप कितना सहज समझाते हैं। तुमको इतना साहुकार बना देते हैं कितना तुमको राजभाग देकर गया फिर तुम कहाँ गंवाये दिया। कहाँ किया। भारत सोने की चिडिया थी। विश्व के मालिक थे। कोई पार्टीशन आदि नहीं था। तुम्हारे हीरे जवाहर आदि सभी छीन ले गये। यह ड्रामा बना हुआ है। भक्तिमार्ग में माया ने तुम..... सभी छीन लिया है। फिर भी ऐसा होगा। बेहद के बाप कहते हैं मेरे बच्चे काम चिक्षा पर चढ़ काले हो गये हो। फिर मुझे आना पड़ता है जगाने लिये। तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान थी। फिर तमोप्रधान बनी है। फिर सतोप्रधान बनेंगे याद की यात्रा से। बाप के साथ कनेक्शन रखना है। भगवानुवाच पर विश्वास रखना होता है ना। वह .... ही सत्य। सच जब आते हैं तो भारत खास सचखण्ड बनता है। आम दुनिया। भारत झूठ है तो सभी झूठ ही है। झूठ खण्ड सच खण्ड इनको ही कहते हैं। और कोई खण्ड के लिए नहीं कहेंगे। तुम्हारे सिवाय और कोई की बुद्धि में बैठ न सके। बोले सिर्फ भारत में ही आते हैं क्या। हाँ पहले2 भारत ही पवित्र खण्ड था। अभी अपवित्र बन गया है। प्युरिटी है तो पीस प्रास्पर्टी भी है। पावन थी। धन आदि सभी कुछ था। अभी पतित बनी है इसलिए पतित पावन बाप को याद करते हैं। तुम बच्चों की बुद्धि में है पावन दुनिया में हम राज्य करते .....। राइटस बनाने वाला एक ही बाप है। जो 21 जन्म के लिए बना देते हैं। गीता का भगवान कृष्ण नहीं, परमात्मा सर्वव्यापी नहीं। भगवान ही आकर राजयोग सिखलाये मनुष्य से देवता बनाते हैं। बाप को याद जरूर करना है। बाप, टीचर, गुरु को याद करना है। बाप से वरसा जरूर मिलेगा। बाप पावन बनाते हैं। आमदनी बहुत है तो पावन क्यों नहीं बनेंगे। कल्प2 प्राप्ति होती है। अच्छा गुडनाइट।